Self Respect

21-06-2014

✓ मीठे-मीठे रूहानी बच्चे यह तो समझ गये हैं कि एक तरफ है भक्ति, दूसरे तरफ़ है ज्ञान | भक्ति तो अथाह है और सिखाने वाले अनेक हैं | शास्त्र भी सिखाते हैं, मनुष्य भी सिखाते हैं | यहाँ न कोई शास्त्र हैं, न मनुष्य हैं | यहाँ सिखाने वाला एक ही रूहानी बाप है जो आत्माओं को समझाते हैं | आत्मा ही धारण करती है | परमपिता परमात्मा में यह सारा ज्ञान है, 84 के चक्र का उनमें नॉलेज है, इसलिए उनको भी स्वदर्शन चक्रधारी कह सकते हैं | हम बच्चों को भी वह स्वदर्शन चक्रधारी बना रहे हैं | बाबा भी ब्रह्मा के तन में है, इसलिए उनको ब्राह्मण भी कहा जा सकता है | हम भी उनके बच्चे ब्राह्मण सो देवता बनते हैं | अब बाप बैठ याद की यात्रा सिखलाते हैं, इसमें हठयोग आदि की कोई बात नहीं |

- ✓ हम आत्मा हैं, परमपिता परमात्मा के सामने बैठे हैं | वह देखने में नहीं आता है, लेकिन यह ज्ञान बुद्धि में है | तुम बच्चे समझते हो परमपिता परमात्मा हमको पढ़ा रहे हैं – इस शरीर के आधार से |

- ✓ तुम आत्माओं को यहाँ से जाना है, तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है | तुम अभी यात्रा कर रहे हो | उन्हों का जो योग है, उसमें यात्रा की बात नहीं | हठयोगी तो ढेर हैं | वह है हठयोग, यह है बाप को याद करना |

- ✓यह पढाई है, कल्प-कल्प बाप आकर तुमको पढ़ाते हैं | अभी है संगमयुग | तुमको ट्रांसफर होना है | ड्रामा के प्लैन अनुसार तुम पार्ट बजा रहे हो, पार्ट की महिमा है | बाप आकर पढ़ाते हैं ड्रामा अनुसार | तुमको बाप से एक बार पढ़कर मनुष्य से देवता जरुर बनना है | इसमें बच्चों को तो ख़ुशी होती है | हम बाप को भी और रचना के आदि मध्य अन्त को भी जान गये हैं | बाप की शिक्षा पाकर बहुत हर्षित होना चाहिए | तुम पढ़ते ही हो नई दुनिया के लिए | वहाँ है ही देवताओं का राज्य तो जरुर पुरुषोत्तम संगमयुग पर पढ़ना होता है | तुम इस दुःख से छूटकर सुख में जाते हो |

✓तुम्हारी अवस्था ऐसी हो जाती है जो इस दुनिया में होते हुए उनको देखते नहीं हैं | खाते-पीते भी तुम्हारी बुद्धि उस तरफ हो | जैसे बाप नया मकान बनाते हैं तो सबकी बुद्धि नये मकान तरफ़ चली जाती है ना | अभी नई दुनिया बन रही है | बेहद का बाप बेहद का घर बना रहे हैं | तुम जानते हो हम स्वर्गवासी बनने के लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं |

✓इस समय तुम आत्माओं को परमपिता पढ़ाते हैं इसलिए गायन है – आत्मायें परमात्मा अलग रहे बहुकाल....कल्प-कल्प मिलते हैं | बाकी जो भी सारी दुनिया है, वह सब देह-अभिमान में आकर देह समझकर ही पढ़ते पढ़ाते हैं |

- ✓हम आत्माओं को बाप इस शरीर द्वारा पढ़ाते हैं | घड़ी-घड़ी याद रखो यह एक ही समय है जब आत्माओं का बाप परमपिता पढ़ाते हैं | बाकी तो सारे ड्रामा में कभी पार्ट नहीं है, सिवाए इस संगमयुग के इसलिए बाप फिर भी कहते हैं मीठे-मीठे बच्चों अपने को आत्मा निश्चय करो, बाप को याद करो | यह बड़ी ऊँची यात्रा है – चढ़े तो चाखे वैकुण्ठ रस | विकार में गिरने से एकदम चकनाचूर हो जाते हैं | फिर भी स्वर्ग में तो आयेंगे, लेकिन पद बहुत कम होगा | यह राजाई स्थापन हो रही है |

- ✓तुम माताओं की बहुत महिमा है, वन्दे मातरम् भी गाया जाता है |

- देलवाड़ा मंदिर में तुम्हारा ही यादगार है |

- तुम्हारी भी यह रूहानी सेना है ना | सारा मदार है याद की यात्रा पर | उनसे ही बल मिलेगा | तुम हो गुप्त वारियर्स |

- तुम जन्म-जन्मान्तर के आशिक हो, एक माशूक के | अब वह माशूक मिला है तो उनको याद करना है |

- महसूसता की शक्ति द्वारा मीठे अनुभव करने वाले सदा शक्तिशाली आत्मा भव

- ✓ यह महसूसता की शक्ति बहुत मीठे अनुभव कराती है – कभी अपने को बाप के नूरे रत्न आत्मा अर्थात् नयनों में समाई हुई श्रेष्ठ बिन्दू महसूस करो, कभी मस्तक पर चमकने वाली मस्तक मणी, कभी अपने को ब्रह्मा बाप के सहयोगी राईट हैण्ड, ब्रह्मा की भुजायें महसूस करो, कभी अव्यक्त फ़रिश्ता स्वरूप महसूस करो....इस महसूसता शक्ति को बढ़ाओ तो शक्तिशाली बन जायेंगे | फिर छोटा सा दाग भी स्पष्ट दिखाई देगा और उसे परिवर्तन कर लेंगे |

- ✓ अच्छा! मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग | रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते |